फैमिलीज़ ऑफ़ जॉय फाउंडेशन
एडॉप्शन की नयी सोच

**एडॉप्शन के जरिये ही परिवार का निर्माण करना**
***एक दत्तक मां, नई दिल्ली***

यह सर्दियों की एक धुंध भरी सुबह थी जब मेरे नए नए पति ने धीरे से कहा था, "मैं एक बच्चे को गोद लेना चाहूंगा. मुझे हमेशा उन बच्चों का ख्याल आता है जो अपने माता-पिता को खो देते है, उनके लिए क्या होता है - हर बच्चे को एक परिवार के सुरक्षित बचपन और प्रेमपूर्ण माहौल की आवश्यकता होती है। मैं आश्चर्यचकित थी कि हमारी शादी को अभी तीन दिन भी नहीं हुए थे और उन्होंने इस तरह का उल्लेख किया.

दिन तो जैसे महीनों में लुढ़क गए, हमने इस पर लम्बाई पर चर्चा की। क्या हमारा यह इरादा टिका रहेगा, क्या हमें जीवन में बाद में कोई पछतावा होगा, क्या हम बच्चों को न्याय करने में सक्षम होंगे और हमारे परिवारों को यह कैसे लगेगा? हमारे संबंधित माता-पिता ने दादा-दादी होने का इंतजार करना शुरू कर दिया था जिस समय हम शादी कर चुके थे। हम जितना अधिक चर्चा करते थे, उतना ज्यादा विश्वास हुआ कि हमें इस दुनिया में और अधिक बच्चे क्यों लाने हैं जब पहले से ही ऐसे लाखों बच्चे हैं जो एक परिवार की प्रेम, देखभाल और सुरक्षा के पात्र हैं? हमें लगा कि हम ऐसा करने के लिए ही मिले थे और हम इसी तरह से हमारे परिवार का निर्माण करें।

जब हम अपने परिवार वालों को इस सबके बारे में बताया तो उनके कई संदेह और कई आशंकाएं थी - क्या हमें कोई समस्या है? परिवार के वंश का विस्तार कैसे होगा? वे चिंतित थे कि हम एक बहुत ही अनिश्चित क्षेत्र में शामिल हो रहे थे। अगले कुछ सालों में बहुत चर्चा के बाद, हमारे परिवार से कई शक मिट गए.

एक माँ नौ महीनों के लिए खुद को तैयार करती है लेकिन मैंने खुद को पांच साल तक तैयार किया। मेरा बच्चा मेरे दिल में बढ़ रहा था . चुपचाप हमने अपने बच्चे के आगमन के लिए खुद को तैयार किया,. हम जगह जगह से अपने बच्चे के लिए नाना प्रकार के खिलौने, कपडे और साधन लेट रहे. अंत में दिन आया और हमने राहत और आनंद के साथ हमारे बच्चे का स्वागत किया। दत्तक एजेंसी में नन ने अपने छोटे चैपल में एक प्रार्थना की और हमारे तीन महीने के शिशु के साथ अपने आशीर्वाद रखे.

चलते समय एक नन ने मुझे अपने बच्चे के दोधत पीना का समय बताया. उस रात मैंने अपने आप को याद दिलाने के लिए एक अलार्म लगाया था, की कहीं मेरा बीटा भूखा ही न सोता रह जाए. मुझे कितनी मूर्खता महसूस हुई, जब अलार्म बजने से पहले ही मेरे बेटे ने रात को 2 बजे हलके हलके रोना शुरू कर दिया. इसके साथ ही मैंने उसका दूध तैयार करके उसे दे दिया. उस दिन से वह मेरा शिक्षक बन गया मैंने एक अच्छे छात्र की तरह सीखा और उसने मुझे अपनी मुस्कान और किलकारियों से पुरस्कृत किया ... .और हाँ, उसका जादो सरे परिवार पर छा गया.

दस साल से अधिक समय हो गया है जब से हमने हमारी सुंदर यात्रा शुरू की और हमारी बेटी को अपनाने के साथ हमारे परिवार का विस्तार भी किया. हमारा घर इश्वर की कृपा और बच्चों की हंसी से गोंजता है.